Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

महाकवि हरिनारायण दीक्षित का संस्कृत साहित्य को अवदान

डॉ.देवनारायण पाठक
शोध निर्देशक,
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, जमुनीपुर,
कोटवाँ, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

ऋतुराज
शोध–छात्र, संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, जमुनीपुर,
कोटवाँ, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number : 101-104
Publication Issue :
January-February-2022
Article History
Accepted : 01 Feb 2022
Published : 10 Feb 2022

शोध आलेख सार– डॉ. हरिनारायण दीक्षित आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित एवं मुर्धन्य विद्वान् है। इनके काव्य आधुनिक समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनैतिक बुराइयों, प्रदूषण की समस्या आदि को उजागर करने के साथ ही इन समस्याओं के निवारण में समर्थ हैं। अतएव आधुनिक संस्कृत साहित्य में इनकी काव्य कृतियाँ अन्यन्त उपयोगी होने के साथ ही समाज के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है।

मुख्य शब्द – महाकाव्य, रुपक, गद्यकाव्य, सन्देशकाव्य, खण्डकाव्य, शतक काव्य आदि।

13 जनवरी 1936 ई. में जालौन जिले के पड़कुला नामक गाँव में जन्मे महाकवि हरिनारायण दीक्षित बाल्यकाल से ही बहूमूल्य प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने काव्य प्रतिभा के बल पर संस्कृत साहित्य जगत में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की है। संस्कृत साहित्यानुरागी महाकवि हरिनारायण दीक्षित जी ने लगभग 86 वर्ष के अपने जीवनकाल में संस्कृत साहित्य को कुल 30 रचनाएँ प्रदान कर आधुनिक संस्कृत साहित्य के भण्डार गृह को समृद्ध करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अपनी काव्य रूपी लेखनी संस्कृत साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से चलायी है। उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर आधुनिक कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों, भ्रष्टाचार, धर्मन्धता, प्रदूषण, आतंकवाद जैसे ज्वलन्त मुद्दो पर गहरा कटाक्ष किया है। इनके काव्य संस्कृत साहित्य के लिए एक अनूठी देन है। जो जन–साधारण की भावनाओं एवं समस्याओं को सहज रूप से उजागर करते हुए जन–जीवन की साक्षात् झाँकी प्रस्तुत करने में समर्थ है।

संस्कृत साहित्याकाश में महाकवि दीक्षित के साहित्यिक अवदान को भुलाया नहीं जा सकता। महाकवि हरिनारायण दीक्षित के काव्यकृतियों का संक्षिप्त विवरण अधोलिखित है-

महाकाव्य – भीष्मचरितम्– 20 सर्गों में प्रणीत् इस महाकाव्य में कवि ने भीष्मपितामह के जीवन की समस्त घटनाओं का साङ्गोपाङ्ग् वर्णन किया है। जिसका प्रकाशन सन् 1992 में दिल्ली से किया गया।

भारतमाता ब्रूते–प्रस्तुत महाकाव्य के बाईस सर्गों में कवि ने भारतमाता को माध्यम बनाकर वर्तमान कालीन समाज में व्याप्त दुर्गुणों, सामाजिक बुराईयों, राजनैतिक बुराईयों, हत्या, बलात्कार, पर्यावरण प्रदूषण आदि पर गहरा व्यंग्य किया है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

श्रीराधाचरितम्–प्रस्तुत महाकाव्य के बाईस सर्गों में कवि ने वृषभानु नन्दिनी श्रीराधा जी का जीवन चरित वर्णित किया है। जिनका प्रकाशन सन् 2005 में दिल्ली से किया गया।

श्रीग्वल्लदेवचरितम्–इस महाकाव्य के 27 सर्गों में कवि ने उत्तराखण्ड के सांस्कृतिक तथा भौगोलिक परिदृष्य को वर्णित करते हुए वहाँ के सुप्रसिद्ध देवता श्री ग्वलदेव के जीवन चरित का विस्तार से वर्णन किया है। जिसका प्रकाशन सन् 2008 में दिल्ली से किया है।

श्रीगुरुमहाराजचरितम्–30 सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में कवि ने अपने परमपूज्य गुरुदेव श्री विद्याधर सरस्वती का जीवन चरित वर्णित किया है। जो सन् 2016 में दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

रूपक– मेनका विश्वावित्रम्– आठ अंकों के इस दृष्यकाव्य में कवि ने मेनका तथा महर्षि विश्वामित्र के अलौकिक प्रेम तथा उनसे उत्पन्न पुत्री शकुन्तला के जन्म का वर्णन है। इस नाटक का प्रकाशन् 1984 ई. में दिल्ली से किया गया।

बाल्मीकिसम्भवम्– छः अंकों के इस नाटक में कवि ने कुसङ्गति के प्रभाव से दस्यु बने, संसार में रत्नाकर के नाम विख्यात, अग्निशर्मा तथा सप्तर्षियों की सङ्गति के परिणामस्वरूप आदि कवि वाल्मीकि बनने की कथा का वर्णन किया है।

गद्यकाव्य –

गोपालबन्धु– इस कथा काव्य में कवि ने वृन्दावन के समीप रहने वाली निर्धन असहाय एक वृद्ध स्त्री तथा उसके पुत्र राकेश का वर्णन किया है। जो भगवान् कृष्ण की भक्ति पर आस्था रखने वाली है। यह अत्यन्त रोमाञ्चकारी गद्यकाव्य है।

अप्पयदीक्षितचरितम्–यह ग्रंथ कवि की प्रथम मौलिक गद्य कृति है इसमें कवि ने दक्षिण भारत के महान् साहित्यशास्त्री श्री अप्पयदीक्षित के जीवन चरित को वर्णित किया है। जिसका प्रकाशन 1981 ई. में दिल्ली से किया गया है।

सन्देशकाव्य–

हनुमद्दूतम्–कवि द्वारा प्रणीत् यह ग्रंथ एक सन्देश काव्य विधा का ग्रंथ है। जिसमें लंकापति रावण द्वारा अपहृत माता सीता द्वारा श्रीराम के पास भेजे गये संदेश का वर्णन है।

खण्डकाव्य –

गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालयम्–कवि दीक्षित ने इस ग्रंथ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुराने इतिहास को बताते हुए इसके सौन्दर्य शासन–प्रशासन आदि पर प्रकाश डाला है। इस ग्रंथ में दो सौ अड़तालिस पद्य है।

पशुपक्षिविचिन्तनम्–दो खण्डों में विभक्त इस खण्ड काव्य में कवि ने वर्तमान युग में हिंसक प्रवृत्ति वालों मनुष्यों द्वारा मनुष्येतर प्राणियों पर किये जाने वाले अत्याचारों का विशद वर्णन किया है।

अजमोहभङ्गम्–इस खण्डकाव्य में कवि ने रानी इन्दुमती के आकस्मिक निधन से मोहग्रस्त होकर कर्तव्य विमुख हुए राजा अज का, अपने कुल पुरोहित महर्षि वशिष्ठ के उपदेशामृत को आत्मसात् करने के परिणामस्वरूप मोहमुक्त होने तथा कर्त्तव्य पथ पर पुनः अग्रसर होने का प्रेरणास्पद वर्णन किया है।

मुक्तक काव्य –

मनुजाश्शृणुतगिरं में–इस मुक्तक काव्य में कवि ने एक सद् उपदेशक भाँति समाज के लिए अत्यन्त हितकारी उपदेश दिये हैं। जो सहृदयों के लिए निश्चय ही आत्मसात करने योग्य है।

शतककाव्य –

देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम्–इस शतक काव्य के एक नौ पद्यों में कवि ने वर्तमान कालीन समाज में व्याप्त ज्वलन्त राष्ट्रीय समस्याओं को अत्यन्त कार्य कुशलता के साथ उभारा है। इस ग्रंथ के माध्यम से कवि ने समाज को 'जियो और जीनो दो' का उपदेश दिया है।

दुर्जनाचरितम्–दो सौ इक्यावन पद्यों वाले इस शतक काव्य में कवि ने दुर्जनों की धूर्त्तता, वाचालता, दुर्जनता आदि आचरणो का साङ्गोपाङ्ग वर्णन करके सज्जनों को उनसे सावधान करने का उपदेश दिया है।

सज्जनाचरितम्–दो सौ इक्यावन पद्यों वाले इस शतक काव्य में कवि ने सुभाषित सम्पन्न वैदर्भी शैली में सज्जनों के आचऱ्ण तथा उनके विविध मनोहारी गुणों का वर्णन हुए सज्जनों के आदर–सत्कार तथा उनके सद्गुणों का अनुसरण का उपदेश दिया है।

उपदेशशती–एक सौ सत्रह पद्यों वाले इस शतक काव्य में कवि ने अन्योक्ति के माध्यम से आधुनिक कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्याय, भ्राष्टाचार, अत्याचार आदि पर व्यंग्य करते हुए, सियार, भालू, शेर, कोयल, हिरन इत्यादि पशुपक्षियों के माध्यम से समाज को नीतिपरक सदुपदेश दिया है।

निबन्ध संग्रह–

संस्कृतनिबन्धरश्मि–कवि प्रणीत् यह एक निबन्ध संग्रह ग्रंथ है जिसकी रचना कवि ने इण्टरमीडिएट तथा बी.ए. के छात्रों को निबन्ध की शिक्षा देने हेतु की है।

संस्कृतनिबन्धावली–इस ग्रंथ की रचना कवि ने स्नातकोत्तर के छात्रों को निबन्ध की शिक्षा प्रदान करने हेतु लिखी है। जिसका प्रकाशन सन् 1985 ई. में ई. में किया गया।

कथाकाव्य –

निर्वेदनिर्झरिणी–इस कथा काव्य में कवि ने नायक विद्याधर के माध्यम से चौदह कथाओं का वर्णन कर उन्हें परस्पर सम्बद्ध करके निर्वेद की महती निर्झरिणी का रूप दे दिया है। इस कथाकाव्य का प्रकाशन सन् 2010में दिल्ली से किया गया।

सम्पादित, सहसम्पादित तथा अनुदित ग्रंथ–

पण्डितराजजगन्नाथकाव्यग्रन्थावली– महाकवि दीक्षित द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ में कवि ने महान् काव्यशास्त्री तथा साहित्यकार पण्डितराज जगन्नाथ की उपलब्ध सम्पूर्ण काव्यम्पदाओं का तदनुरूप हिन्दी अनुवाद किया है।

बुन्देलखण्डीकविपण्डितराजाराममिश्रकाव्यसंग्रह– कवि द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ में बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध कवि पंडित राजाराम मिश्र के उपलबध सभी काव्यकृतियों का संग्रह कर तदनुरूप हिन्दी अनुवाद किया गया है।

भारतीयकाव्यशास्त्रमीमांसा– महाकवि दीक्षित द्वारा सहसम्पादित इस ग्रंथ में विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखे गये काव्यशास्त्रीय शोधालेखों का संग्रह किया गया है।

शोधप्रबन्ध एवं अन्य ग्रंथ–

तिलकमञ्जरी एक समीक्षात्मक अध्ययन– कवि दीक्षित प्रणीत् यह एक शोध प्रबन्ध ग्रंथ है। जिसे कवि ने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्ति हेतु प्रस्तुत किया। जो प्रसिद्ध कथाकार धनपाल कृत तिलकमञ्जरी पर लिखा गया है।

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना– महाकवि दीक्षित प्रणीत् यह ग्रंथ राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत–प्रोत भारतीय शूरवीरों के आत्म–बलिदानों एवं उनके वीरतापूर्ण कार्यों से युक्त है। जिसे कवि ने डी.लिट् की उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत किया।

शोध लेखावली– कवि दीक्षित की इस रचना में उनके द्वारा लिखित उन शोध पत्रों का संकलन है, जो प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं तथा सम्मेलनों में स्थान प्राप्त चुके हैं।

संस्कृतानुवादकालिका– यह कवि की प्रथम रचना है, जो कवि द्वारा छात्र–छात्राओं को अनुवाद की शिक्षा देने हेतु लिखी गई है।

राष्ट्रीयसूक्तिसंग्रह– कवि ने इस ग्रंथ में राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण लगभग 1000 से अधिक सूक्तियों का संग्रह कर हिन्दी अनुवाद किया गया है।

गद्यकाव्यसमीक्षा– कवि दीक्षित प्रणीत् इस ग्रंथ में गद्यकाव्य की विशेषताओं को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ, लज्जा पन्त, महाकवि डॉ. हरिनारायण दीक्षित के काव्यों का सांस्कृतिक परिशीलन
2. डॉ. हरिनारायण, दीक्षित भीष्मचरितम्, ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
3. डॉ. हरिनारायण दीक्षित, भारतमाता ब्रूते, ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2003
4. डॉ. हरिनारायण दीक्षित, श्रीग्वल्लदेवचरितम्, ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008
5. डॉ. हरिनारायण दीक्षित, श्रीराधाचरितम्, ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2005